www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्षः 87 अंक 24
अश्विनी कृष्णा दौज
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
21 सितम्बर से 5 अक्टूबर 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114
मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
संपादक मंडलः
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर
प्रकाशकः
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879
प्रकाशनः दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018
मुद्रकः
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर
ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारुकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

यह अंक आर्य समाज टमकोर (झुंझुनू) के सौजन्य से-

आर्य समाज टमकोर स्थापना शताब्दी समारोह की एक झलक

दिनांक २८,२९,३०,३१ अगस्त १ सितम्बर, २०१३

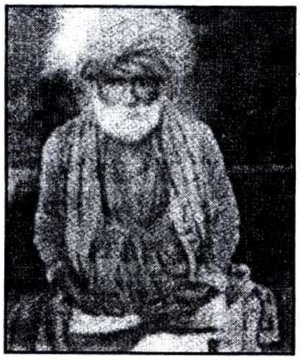

महात्मा कालूरामजी द्वारा स्थापित आर्य समाज टमकोर जिला-झुंझुनूं, राजस्थान द्वारा अपनी स्थापना के १०० वर्ष होने पर स्थापना शताब्दी समारोह का आयोजन बड़ी धूम धाम से किया गया। इस अवसर पर सारे नगर में ओ३म् के ध्वज लगाकर नगर को भव्य केसरिया रंग से सजाया गया। जगह-जगह मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम द्वार योगीराज कृष्णचन्द द्वार बनाये गये।

आर्य समाज मंदिर को महात्मा कालूराम गांव के रूप में सजाया गया। लाइटिंग और शामियानों झण्डियों, ओ३म् ध्वजाओं से सजा आर्य समाज और उसके आसपास के परिसर की शोभा देखते ही बनती थी, यज्ञशाला तो दुल्हन की तरह सजाई गयी थी इसके पास ही भोजन व्यवस्था के विशाल टेन्ट लगे हुए थे। एक विशाल नोहरे में 'महर्षि दयानन्द ग्राम' नाम से कार्यक्रम स्थल का निर्माण किया गया था। ये सारी व्यवस्थाएँ बता रही थीं कि टमकोर के आर्य समाज के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं में कितना जोश और उत्साह था लगन और श्रद्धा थी।

आर्य समाज टमकोर के कार्यकर्ता अधिकारी एवं आयोजन समिति के सदस्य श्री शिवदत्त राय आर्य, प्रधान श्री वासुदेव आर्य, मंत्री श्री राजूसिंह, उपमंत्री श्री शिवशंकर आर्य, कोषाध्यक्ष श्री सरदाराम जांगिड़, श्री रामकुमार जांगिड़, श्री सुधीर कुमार आर्य, श्री शिवभगवान सैनी, श्री शिवकुमार आर्य, श्री जगदीश माखरिया, श्री बनवारीलाल पटवारी, नरेन्द्रसिंह शेखावत, संयोजक ताराचन्द गुप्ता सब दौड़-२ कर व्यवस्थाओं एवं अतिथि सत्कार में लगे हुए थे, इतना उत्साह लोगों की घर शादी, विवाहों में भी नहीं देखा जाता इतनी भाग दौड़ और परिश्रम में वे सब बड़ी शान्ति और आन्तरिक आनन्द का अनुभव कर रहे थे। इतनी बड़ी व्यवस्थाओं का कार्य असाधारण था। बाहर से आये हुए विद्वानों, भजनोपदेशकों, संन्यासियों की आवास व्यवस्था नगर की अनेक सुसज्जित धर्मशालाओं, अतिथिगृहों सामाजिक भवनों में की गयी जिनमें सभी आधुनिक सुविधाएं थीं, आने वाले अतिथि व्यवस्थाओं को देख देखकर दिल्ली व अजमेर जैसे बड़े नगरों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की याद कर रहे थे। यज्ञ समिति, आवास समिति, भोजन समिति, टेन्ट एवं वाहन समिति सभी अपने-२ कार्यों में बड़ी श्रद्धा और आनन्द से लगे हुए थे।

इस विशाल भव्य कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के तेजस्वी संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (वैदिक आश्रम पिपराली) ने की। अन्य विद्वानों भजनोपदेशक आचार्य ब्र. ओमस्वरूपजी डिगाडला, आचार्या डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदा वाराणसी एवं कला गुरूकुल शिवगंज सिरोही की सात वेदपाठी ब्रह्मचारिणियां आचार्य विनोद शास्त्री फतेहपुर आचार्य अनुज शास्त्री

यज्ञ से किसी दूसरे पदार्थो को अपना समझनें की प्रवृति नष्ट हो जाती है।

www.thearyasamaj.org

सहारनपुर, श्री सहदेव बेधड़क, मेरठ उ. प्र. श्री कुलदीप आर्य बिजनोर उ.प्र. सुश्री अंजलि आर्य करनाल हरियाणा, डॉ. ऋचा योगमयी बिहार, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती महेन्द्रगढ़, हरियाणा, स्वामी सदानन्द सरस्वती दीनानगर पंजाब, स्वामी शान्तानन्द सरस्वती मथुरा उ.प्र., श्री भूपेन्द्र सिंह जयपुर श्री ओमप्रकाश राघव उ.प्र. श्री विनोद कुमार आर्य, दिल्ली और अनेक प्रसिद्ध सन्यासी एवं भजनोपदेशकों ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान आर्य विजयसिंह भाटी, मंत्री श्री अमर मुनि, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर कुमार आर्य, आर्य वीर दल राजस्थान के कार्य कारी संचालक देवेन्द्र शास्त्री, जयपुर आर्य निर्मात्री सभा के श्री रणजीत शास्त्री तारानगर जैसी आर्य समाज की अनेक विभूतियों ने भाग लिया।

२८.८.२०१३ को प्रातःकाल ८ बजे से ११ बजे तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन हुआ, आर्य समाज की यज्ञ शालाएं एवं चौक में पांच सुन्दर यज्ञ कुण्ड बनाये गये थे परन्तु यजमानों की अधिकता एवं श्रद्धा को देखते हुए तीन यज्ञ कुण्डों की और व्यवस्था की गयी। ३१ जोड़े सपत्नीक यजमानों से सुशोभित यज्ञकुण्डों में आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा एवं आचार्य विनोद शास्त्री के ब्रह्मत्व में कला गुरूकुल शिवगंज की ८ ब्रह्मचारिणियों के वेद पाठ पंच सन्धि धन पाठ एवं महाबामदेव्य गान को सुनकर प्राचीन ऋषि मुनियों के आश्रमों का सुन्दर दृश्य उपस्थित हो गया और पांच दिन तक नगर स्वाहा-२ की मधुर ध्वनियों से गुंजायमान हो। गाय का शुद्ध घृत एवं स्वयं बनायी गयी उत्तम हवन सामाग्री से यज्ञ होने के कारण दूर-२ तक वातावरण सुगन्धित हो गया।

सभी यज्ञ वेदियों पर गले में गायत्री मंत्र का दुपट्टा नवीन यज्ञोपवीत किये हुए और सिर पर भगवा रंग की मारवाड़ी पगड़ी बांधे हुए, ओ३म् का बिल्ला लगाये श्रद्धा प्रेम से भरे हृदय वाले यजमान पधारे। ऐसे लगते थे मानो स्वर्ग में देवता मिलकर यज्ञ कर रहे हैं। जैसे हम आज के युग में नहीं बल्कि भगवान राम के युग में बैठे हों। साथ ही गुरूकुल की ब्रह्मचारिणियों का स्वर सहित वेद पाठ मानो सोने पर सुहागे का कार्य कर रहा था। हरे पत्तों नारियलों से सजे कलश यज्ञ कुण्ड की शोभा में चार चांद लगा रहे थे।

यज्ञ के मध्य-२ में डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदा ने दर्शनों और शास्त्रों के प्रमाण सहित वेदमंत्रों की व्याख्या करते हुए बताया कि वैदिक धर्म या हिन्दू धर्म में 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' इस यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा गया है यज्ञ का अर्थ है-

१. देव पूजा, देवताओं, विद्वानों, गुरूजनों बड़े बुजुर्गों का आदर सम्मान सेवा सुश्रूषा।

२. संगतिकरण- उत्तम सामग्रियों, उत्तम विचारों, श्रेष्ठ लोगों का मिलना।

३. दान- अपनी सात्विक कमाई से प्राणिमात्र के हित के लिए दान देना, विद्यालयों, गौशालाओं, आश्रमों, गुरूकुलों एवं सामाजिक हित के कार्यों में सहयोग करना सब यज्ञ के अन्तर्गत आता है। विश्व कल्याण का उत्तम उपाय यज्ञ ही है। यज्ञ में वेदमंत्रों के साथ दी गई उत्तम घृत सामग्री की आहुतियों से जल-वायु-वनस्पति-आकाश-पृथ्वी, पशु, पक्षी, मानव सभी स्वच्छ और सुगन्धित होते है। यज्ञ करने से मानव रोग रहित और सुखी दीर्घ जीवन प्राप्त करता है।

मानव जीवन को सफल सुखद बनाने के लिए पंच महायज्ञ बहुत आवश्यक हैं जो इस प्रकार हैं-

१. ब्रह्मयज्ञ- प्रातःकाल एकान्त में शान्त बैठकर परम पिता की उपासना करनी एवं सत् शास्त्रों का स्वाध्याय करना।

२. देवयज्ञ- जल पृथ्वी, आकाश, वायु, अन्तरिक्ष, वनस्पति, पर्यावरण सबको शुद्ध करने से लिए उत्तम घृत सामग्री से विधिपूर्वक हवन करना।

३. पितृयज्ञ- अपने जीवित माता-पिता की सेवा सुश्रूषा करना, भोजन, वस्त्र, आज्ञा पालन से उनको सन्तुष्ट रखना। आजकल समाज में अधिक मानव अपने वृद्ध माता-पिता, भाई बहनों की सेवा न करके अनावश्यक दिखाने के पूजा पाठ, कावड़ लाने जैसे कार्यों में उलझे हुए हैं।

४. अतिथि यज्ञ - अपने घर आये हुए विद्वान, संन्यासी, ब्रह्मचारी, सम्बन्धियों की पूर्ण मनोयोग से सेवा करना अतिथि यज्ञ कहा जाता है।

५. बलि वैश्यदेव यज्ञ- निर्धन, पतित, कौवा आदि पशु एवं पशुओं हेतु भोज्य पदार्थ देना उनको पीड़ा न पहुंचाना। बलिवैश्य देव यज्ञ कहा जाता है।

आचार्य विनोद शास्त्री ने बताया कि जीवन को पूर्ण एवं आनन्दमय बनाने के लिए- अविद्यया मृत्युं तीर्त्वाविद्ययामृत मश्नुते। अविद्या अर्थात् भौतिक पदार्थ वस्त्र भवन सम्पति आदि जीवन यात्रा हेतु आवश्यक हैं परन्तु पूरी तरह इनमें डूब जाना उचित नहीं इनके संग्रह के साथ विद्यया अन्तर्गत अनश्वर आत्मा परमात्मा के ज्ञान और चिन्तन से अमृत सुख-मोक्ष प्राप्त होते हैं मानव जीवन का कल्याण न तो अकेले ज्ञान से और न अकेले कर्म से अपितु ज्ञान पूर्वक कर्म करने से ही इस जीवन का तथा अगले जन्म का कल्याण होता है। परमात्मा की न्याय व्यवस्था से कोई बच नहीं सकता इसलिए अपने खाते में पापों की अपेक्षा पुण्य जमा करने के लिए सदैव प्रयास करना चाहिए।

शताब्दी समारोह के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती वैदिक आश्रम पिपराली ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में लोगों का आह्वान किया और कहा कि समाज में व्याप्त बुराइयों कन्या भ्रूण हत्या, अन्धविश्वास, रूढ़ियां, अशिक्षा नशा से हर मनुष्य दुःखी है। गांव - २ में आर्य समाजों की स्थापना हो, वैदिक धर्म का प्रचार हो तो ये सभी दुःख समाप्त हो सकते हैं। यदि मुझे पूरी तरह से समर्तित उत्साही ५० कार्यकर्ता भी मिल जाये तो पूरे विश्वास से कहता हूं कि कम से कम शेखावाटी क्षेत्र को शराब, चोरी, हत्या ओर अन्य बुराइयों से मुक्त कर सकता हूं। उन्होंने लोगों आह्वान किया कि गौरक्षा यज्ञ, वेद और यज्ञोपवीत की रक्षा के लिए समाजें आर्य समाज के कार्यकर्ताओं और विद्वानों का सहयोग करें तो भारत को सुखी और व्यसन मुक्त बनाया जात सकता है। आर्य समाज ने सदैव कुरीतियों, अन्धविश्वासों के विरूद्ध संघर्ष किया है, और करता रहेगा।

डिगाडला से पधारे आचार्य ओमस्वरूप जी ने पांच दिन तक चली यज्ञ सत्संग भजन की गंगा में स्नान करती हुई जनता को सम्बोधित करते हुए बताया कि टमकोर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के परिश्रम से टमकोर इस भव्य आयोजन के कारण तीर्थ स्थान बन गया है जिसमें समस्त राजस्थान, हरियाणा, यू.पी., दिल्ली, पंजाब बम्बई, कलकता,

यज्ञ से प्रलोभन, आत्मश्लाधा के आकर्षण से मनुष्य सर्वथा पृथक हो जाता है।

www.thearyasamaj.org

हैदराबाद, अमेरिका से आ आकर लोग ज्ञान गंगा में गोते लगा रहे हैं और अपने जीवन को धन्य मान रहे हैं। उन्होंने कहा कि तीर्थ केवल हरिद्वार, मथुरा, काशी, द्वारिका, केदारनाथ, बद्रीनाथ ही नहीं है अपितु जिनके ज्ञान से मानव जीवन का कल्याण हो, उद्धार हो मोक्ष की प्राप्ति हो। ऐसा विद्वानों उपदेशको ही सच्चे तीर्थ है। कहीं जाकर केवल स्नान करने या भ्रमण करने से कल्याण नहीं होगा। इन्होंने महर्षि दयानन्द के १००० कलैण्डर और साहित्य निःशुल्क वितरण किये। उन्होंने बताया कि वर्षा कम होना या अधिक होना, उत्तराखण्ड जैसी आपदा ईश्वर नहीं करता उसने तो प्रकृति के नियम बना दिये मानव उनका पालन नहीं करता तब ऐसा होता है। यज्ञ न करने से इस प्रकार की हानियां होती है।

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती महेन्द्रगढ़ ने आर्यो का आह्वान किया कि आपस में मिलजुलकर आर्य समाज के गौरक्षा, राष्ट्र निर्माण, वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ायें। इसी से हम सबका और देश का कल्याणहै। आचार्य अनुज शास्त्री ने उपनिषदों रामायण महाभारत के अनेक आख्यानों के द्वारा बताया कि इन शास्त्रों की कथाओं को जीवन में उतारने से कल्याण संभव है। उन्होंने आचार्य चाणक्य का उद्धरण देकर बताया कि जिन घरों में यज्ञ नहीं होते विद्वानों का आना और स्वागत नहीं होता यज्ञ के धूंए के निशान घर में नहीं होते वे घर श्मसान के बराबर हैं।

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क एवं श्री कुलदीप आर्य ने भजनोपदेशों के माध्यम से महर्षि दयानन्द का समाज को योगदान राष्ट्ररक्षा, और रामायण, महाभारत के अनेक प्रसंगों की चर्चा करते हुऐ भ्रातृ प्रेम माता पिता की सेवा आज्ञा पालन, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का संदेश दिया। राजस्थान के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र आर्य श्री ओमप्रकाश राघव, श्री विनोद कुमार आर्य ने टमकोर के आस-पास के अनेक गांवों में वैदिक धर्म का प्रचार एवं कुरीति निवारण करते हुए इस समारोह की गरिमा को और भी अधिक विस्तार दिया। बताया कि यदि महर्षि दयानन्द और आर्य समाज न होता तो सुनारों का सोना जाता लाला जी के बाट जाते पंडित का पत्रा जाता और सारे ठाठ जाते, रोड अहीर जाट राजपूत कुछ भी नहीं रहते सब विधर्मी हो जाते।

करनाल हरियाणा से पधारीआर्य समाज की नवोदित उपदेशिका मधुर गायिका सुश्री अंजलि आर्या एवं बिहार की डॉ. ऋचा योगमयी ने सुमधुर भजनों उपदेशों से जनता को मंत्र मुग्ध कर दिया उन्होंने महर्षि दयानन्द की नारी जागरण देश रक्षा एवं समाज सुधार जैसे विषयों पर प्रभावशाली उद्‌बोधन दिये। न केवल राजस्थान अपितु देशभर और विदेश से आने वाली जनता से प्रत्येक कार्यक्रम में यज्ञशाला एवं पाण्डाल खचाखच भरा रहता था। आयोजक और आने वाले दोनों ही हर्ष विभोर थे।

''इस कार्यक्रम में एक नया होनहार सितारा चमक कर सामने आया, जिसने सबको बहुत प्रभावित किया है वह है आर्य समाज टमकोर के संयोजक ताराचन्द गुप्ता इन्होंने कार्यक्रम संचालन में पांडाल सज्जा में, स्मारिका प्रकाशन में, अतिथि सेवा में सबका मन मोह लिया, आर्य समाज टमकोर को इस होनहार लाडले पर बहुत गर्व है और बहुत आशाएँ हैं सभी विद्वानों एवं आयोजकों ने इसके कार्य की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की तथा आगे उन्नति करने का आशीर्वाद दिया। भगवान इस प्रकार की लगन-निष्ठा-श्रद्धा, कार्य क्षमता बनाये रखे, भविष्य में यह आर्यसमाज टमकोर का मजबूत स्तंभ बने।''

कार्यक्रम की उपस्थिति एवं सफलता से सभी आश्चर्य चकित और गौरवान्वित थे। इस कार्यक्रम की सफलता के कारण यहां का आयोजक मण्डल और आने वाले आर्य बन्धु सभी आनन्द विभोर हो रहे थे। यहां के सभी कार्यकर्ता जीजान से लगे थे। आर्य समाज के संयोजक ताराचन्द का उत्साह, लगन, और परिश्रम अनोखा था। भगवान आर्य समाज को ऐसे युवा कार्यकर्ता के रूप में सुन्दर उपहार ही मानता हूं।

इस कार्यक्रम में एक और सबसे बड़ी विशेषता यह देखने को मिली कि टमकोर के जितने भी आर्य बन्धु थे वे तो एक से बढ़कर एक सेवा में लगे ही थ। साथ ही उन सबके रिश्तेदार और सम्बन्धी दूर-दूर से इस प्रकार आये थे। जैसे परिवार की शादी विवाह में सम्मिलित होने के लिए आये हो। राजस्थान के बाहर और विदेश से सभी के सम्बन्धी आये और सब इतने प्रसन्न थे कि न जाने उन्हें क्या मिल गया हो? सभी अतिथियों और विद्वानों की सेवा में लगे थे। और सभी नें मुक्त हस्त से दान दिया हर व्यक्ति उनके सम्बन्धी ऐसा अनुभव कर रहे थे। जैसे उनके घर का उत्सव निजी कार्यक्रम हो। इसमें किसी प्रकार की कमी न रह जाये।

३० अगस्त को शाम ५ बजे से नगर में विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी। सबसे आगे आर्य युवक घोड़े पर सवार पगड़ी बांधे ओम की ध्वाजा लिये चल रहे थे। उसके पीछे गुरूकुल की दो ब्रह्मचारिणियां साफा बांधे, हाथ में तलवार लिए घोड़ों पर सवार होकर चल रही थी। उनके पीछे सभी सन्यासी और विद्वान स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के नेतृत्व में चल रहे थे, जीपों में ऊंट गाड़ियाँ में ओ३म् ध्वजा के मान्य उपदेशक एवं वृद्ध बैठे। भजन और उद्‌घोषों से गांव को आर्य नगर बना दिया। बीच में नगर के नर नारी उद्‌घोष करते चल रहे थे। उनके पीछे कन्या गुरूकुल धीरणवास ब्रह्मचारिणियां हाथों में तलवार और ढाल लेकर चल रही थी। गुरूकुल आर्य नगर के ब्रह्मचारी तथा टमकोर के अनेक संस्थाओं के छात्र-छात्राएं पंक्तिबद्ध हो हाथों में ओ३म् ध्वज लिए हुए भारत माता की जय, महर्षि दयानन्द की जय, आर्य समाज अमर रहे जैसे उद्‌घोषों से आकाश को गुंजा रहे थे। नगर निवासी बड़े कौतूहल से शोभा यात्रा का आनन्द ले रहे थे, गांव में स्थान स्थान पर मित्र मण्डल संगठन द्वारा ठण्डे पानी की व्यवस्था की गई थी। उनका स्वागत करने का तरीका यात्रियों का उत्साह बढ़ा रहा था।

इनके पीछे आचार्य महापज्ञ इन्टरनेशनल प. स्कूल की छात्र-छात्राओं का उत्साह देखते ही बनता था। जोर जोर से जय घोष करते बच्चों ने शोभायात्रा की शान में चार चांद लगा दिये इनके बाद राजकीय आदर्श उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी बड़े जोश खरोश से वैदिक धर्म की जय भारत माता की जय के उद्‌घोष लगा रहे थे छात्रों के हाथों में लगे ओ३म् ध्वज की जयघोष के साथ आकाश में ऊपर उठ जाते थे। नगर के वातावरण को धर्ममय बनाती शोभा यात्रा टमकोर के मुख्य बस स्टेण्ड पर पहुंच कर एक सभा के रूप में बदल गई।

व्यायाम प्रदर्शन- प्रतिवर्ष की भांति टमकोर के स्टेण्ड पर पहले से भी भीड़ जमा थी । सारी शोभायात्रा भी वहां सभा के रूप में एकत्रित हो गयी और व्यायाम प्रदर्शन प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम गुरूकुल धीरणवास

www.thearyasamaj.org

की ब्रह्मचारिणियों ने योगासन स्तूप बनाकर लोगों को निरन्तर करतल ध्वनि के लिए मजबूर कर दिया। वैदिक धर्म की जय महर्षि दयानन्द की जय के घोषों से आसमान गूंजने लगा, अब बारी थी, तलवार प्रदर्शन की इन ब्रह्मचारिणियों के एक हाथ में तलवार एक हाथ में ढाल और जब द्वन्द्व युद्ध आरम्भ हुआ तो खटाखट खटाखट की आवाज एवं तलवारों की चंचल गति ने महारानी लक्ष्मीबाई और रानी दुर्गावती की याद को ताजा कर दिया। ब्रह्मचारिणियों को पुरस्कार देने में होड़ लगी थी बनवारीलाल पटवारी, शिवकुमार आर्य, वासुदेवजी आर्य, शिवशंकर आर्य, रामगोपाल आर्य और बम्बई कलकता से पधारें बन्धुओं ने तथा अन्य स्थानों से पधारे हुए लोगों ने पुरस्कारों की वर्षा ही कर दी। दर्शक आश्चर्य चकित होकर तालियां बजाने से रुक ही नहीं रहे थे। गुरूकुल शिवगंज की छात्राओं ने भी लाठी चलाने का प्रदर्शन कर दर्शकों को मंत्र मुंग्ध कर दिया। इसके बाद गुरुकुल आर्य नगर के ब्रह्मचारणियों ने अद्भुत व्यायाम प्रदर्शन किया। अनेक प्रकार की दण्ड बैठक योगासन स्तूप दिखाकर दर्शकों का मन मोह लिया। ब्रह्मचारियों की चुस्ती-फुर्ती उत्साह बड़ा गजब का था। एक ब्रह्मचारी ने ५ सूत ६ सूत के लोहे के मोटे सरियो को गले से मोड़कर दिखाया तो दर्शकों की आंखें आश्चर्य से खुली की खुली रह गयीं। इसके बाद २० टयूबलाइट के बण्डल को छाती से चकना चूर करके दिखाया तो दर्शकों के आश्चर्य की सीमा न रही, एक से एक आश्चर्यजनक प्रदर्शन हो रहे थे। दर्शक पुरस्कारों की वर्षा कर रहे थे। अब बारी थी छाती पर एक क्विंटल का पत्थर तुड़वाने की ब्रह्मचारी जमीन पर लेट गया छाती पर भारी पत्थर रखा गया और मोटे लोहे के घन से चोट मार कर उसे तोड़ा गया यह प्राणायाम की शक्ति का प्रदर्शन था। जनता वाह-२ करने लगी। और गुरुकुलों की गतिविधियों की जानकारी होने पर वैदिक धर्म की जय घोष करने लगी। लड़की एवं लड़कों के गुरुकुलों में प्रतिदिन पढ़ाई के साथ व्यायाम संध्या हवन निश्चित रूप से कराये जाते हैं। इसके बाद वह सभा शोभा यात्रा के रूप में गांव में घूमती हुई वापिस आर्य समाज मन्दिर की ओर आई वहां शोभा यात्रा में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं को मिष्ठान्न वितरण कर शोभायात्रा का विसर्जन किया गया।

शोभायात्रा से गांव के नर नारी युवा बच्चे बहुत प्रसन्न थे अपने-२ दरवाजों, छतों पर दर्शकों की भीड़ लग रही थी ३० अगस्त की रात्रि के कार्यक्रम में इतनी भीड़ थी जितनी किसी ने सोची भी नहीं थी रात को ८ बजे से कार्य आरम्भ होता और रात को १२ बजे तक चलता था, कार्यक्रम इतना रोचक प्रेरक, होता कि लोग बिल्कुल शान्तचित्त स्थिर होकर सुनते जो जहां एक बार बैठ जाता उठने का नाम नहीं लेता था। सभी कार्यक्रमों का संचालन आर्य समाज टमकोर के संयोजक ताराचन्द गुप्ता और आचार्य विनोद शास्त्री कर रहे थे। वक्ता विद्वान संन्यासी एवं उपदेशक इतने थे कि सबको बोलने का समय भी नहीं मिल पाता था। सुविधाओं की दृष्टि से देखा जाये तो यह कार्यक्रम अपने आप में सबसे आगे था।

२८ अगस्त से १ सितम्बर तक टमकोर ने एक धार्मिक नगरी या तीर्थ स्थल का रूप ले लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विजयसिंह भाटी और मंत्री श्री अमरमुनि ने अपने सारगर्भित उद्‌बोधन से आर्य जगत का मार्ग दर्शन किया और टमकोर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि एक छोटे से गांव में भोजन आवास यज्ञ कार्यक्रम की इतनी सुन्दर व्यवस्था आश्चर्य जनक है। साथ ही यहां के लोगों में श्रद्धा और अतिथि सेवा का भाव अपने आप में एक अनोखा उदाहरण है। सारे कार्यक्रम में दी गई सुविधाओं की आने वाले सभी लोग मुक्त कण्ड से प्रशांसा कर रहे थे और अपने घर जैसा ही अनुभव कर रहे थे, प्रातः सही समय पर चाय, नाश्ता और इतने बड़े कार्यक्रम भी कच्ची रोटी दाल सब्जी चावल रायता सब कुछ ऐसा जैसे किसी रिश्तेदारी में मेहमान बाजी होती हो।

इस कार्यक्रम की भव्यता का इसी से अनुमान लग सकता है कि इतनी भीड़ होती थी। यज्ञ के समय यज्ञशाला छोटी पड़ जाती थी और दोपहर के तथा रात्रि के कार्यक्रमों में विशाल पाण्डाल छोटा पड़ जाता था। पीछे की कनात खोलकर लोगों को बैठाना पड़ता था। जनता को बैठाने व्यवस्था करने या शान्त करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी।

१ सितम्बर को समापन के दिन अन्य कार्यक्रमों के साथ इस अवसर पर प्रकाशित की गयी स्मारिका का विमोचन स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में डॉ. ब्र. ओ३म् स्वरूपजी तथा अन्य विद्वानों ने किया। स्मारिका के सम्पादक आचार्य विनोद शास्त्री एवं सह सम्पादक ताराचन्द गुप्ता थे।

स्मारिका अनेक वैदिक विद्वानों सन्यासियों के लेखों से सुसज्जित और छोटी-२ वैदिक मान्यताओं की कणिकाओं से सुवासित है। यज्ञ, धर्म गौ, भ्रूण हत्या, आयुर्वेद, योग, स्वास्थ्य, महर्षिदयानन्द, नारी वेद जैसे अनेक विषयों को अपने में समेटे हुए लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन गयी स्मारिका की सार्थक, उपयोगी संरचना की सभी ने प्रशंसा की। इस कार्यक्रम में दिल्ली से आयी साहित्य एवं यज्ञ सम्बन्धी सामान की स्टाल भी लगी थी जहां लोगों ने इच्छानुसार वेदिक साहित्य एवं अन्य सामान की खरीददारी की।

बाहर से आने वाले अतिथियों एवं विद्वानों की सेवा युवा वर्ग तो कर ही रहा था। परन्तु बड़ी उम्र के लोग युवाओं से भी अधिक भाग दौड़ कर रहे थे। जगदीश जी माखरिया, शिवकुमार आर्य रामगोपाल आर्य, राजूसिंह शेखावत, वासुदेवजी आर्य, शिवभगवान सैनी, ये सब लोग बड़ी उम्र के होकर भी युवाओं से भी अधिक उत्साह से कार्य कर रहे थे।

सभी विद्वानों, संन्यासियों उपदेशकों ने आयोजन मण्डल की बहुत प्रशंसा की और सबको आशीर्वाद दिया ये सब जीवन में निरन्तर करे ओर आनन्दित रहे।

इस शताब्दी समारोह में न जाने कितने दिनों स नहीं मिल पाये टमकोर के लोगों को आपस में मिलाकर बड़ा सुखद संयोग बना दिया भिन्न-२ स्थानों से आकर परस्पर प्रीति पूर्वक मिलकर सब लोग समारोह के आयोजकों का धन्यवाद कर रहे थे। इस बड़े कार्यक्रम में किसी की कोई वस्तु गुम नहीं हुई, यदि मोबाइल, घड़ी या अन्य कीमती

यज्ञ औषधि रूप हैं क्योंकि ऋतृ संधियों जो रोग उत्पन्न होते है उसका नाश करता है।

www.thearyasamaj.org

सामान खो जाता तो कुछ देर बाद ही मंच से आवाज लगाकर उसे दे दिया जाता था।

यह कार्यक्रम आरंभ से लेकर अन्त तक पूर्णतः शान्त एवं धार्मिक बना रहा यहां कोई भी सरकारी अधिकारी या नेता नहीं बुलाया गया, आर्य समाज के विद्वानों उपदेशकों के भजन प्रवचन बड़ी शान्त और निर्बाध गति से निरन्तर चलते रहे इतने बड़े और लम्बे कार्यक्रम में किसी प्रकार की अप्रिय स्थिति नहीं बनी और ईश्वर का भी पूर्ण सहयोग मिला वर्षा या तेज हवा या अन्य किसी प्रकार की परेशानी नहीं आयी। सभी कार्य बहुत शान्त सुन्दर सुचारू रूप से सम्पन्न हुए।

इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए बहुत दूर-२ से श्रद्धालु आर्य बन्धु आर्य जिसे भावना ने अतिथि यहां आये, गांव के लोगों ने। अधिक श्रद्धाभाव से उनकी सेवा, आवभगत की मनुहार में इतनी विनम्रता कि सबके आगे हाथ जोड़ खड़े रहते थे। आयोजकों के व्यवहार को देखकर आने वाले लोगों का हृदय हर्ष से गद गद हो जाता था।

यह समारोह केवल राजस्थान या भारत का ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय बन गया यहां विदेश से भी लोग पधारे। न्यूजर्सी अमेरिका से डॉ. सुधीर आर्य। हैदराबाद, आन्ध्रप्रदेश से मालचन्द आर्य के नेतृत्व में ६ बन्धु पहुंचे।

कलकत्ता से - बनवारीलालजी आर्य, ओंकारमल आर्य, अनिल माखरिया, पुष्पा देवी, गायत्री देवी, मीना देवी खेताना अति प्रसन्न दीख रहे थे। डॉ. रामगोपाल, जगदीशजी माखरिया, महेशजी विनयकुमार सपरिवार पधारे।

बम्बई से- मांगीलाल आर्य, किशनलालजी आर्य, पवनकुमारजी सभी सपत्नीक गोविन्दजी रमेशजी गुप्ता सपरिवार पधारे।

काठमाण्डू से- पधारे महेन्द्रजी अग्रवाल, आनन्द विभोर हो रहे थे।

अहमदाबाद से भाई प्रमोदजी अंजू, मधू और उनके परिवार के अन्य सदस्य अपनी मातृभूमि पर भव्य कार्यक्रम से गदगद दीख रहे थे।

पानीपत से पधारे- विकासजी आर्य, मंजू आर्या, ईश आर्य की प्रसन्नता दूर से दिखाई देती थी।

भिवानी से डॉ. सुनील बंसल, सत्यपालजी आई.जी. हार्दिक प्रसन्न हुए। गंगानगर से श्री शुद्धबोधजी सुरेन्द्रजी, डॉ. भवानीलाल भारती के पुत्र श्री गौरमोहन एवं अन्य परिवार जन यहां पहुंच कर अत्यन्त गौरवान्वित थे।

जयपुर से सुनीता जी सत्यार्थी उनके भाई, सुमित्रा जी, संगीताजी, सुलोचना देवी, कृष्णगोपालजी, आनन्दजी, पूनमजी, श्री अशोक आर्य श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति अपने परिवारों के साथ पहुंचकर बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

नागपुर- जगदीशजी गुप्ता, शिवकुमार गुप्ता, एवं उनके साथियों की खुशी का ठिकाना नहीं था।

देहली से- श्री जुगलकिशेर जड़िया, कान्ता जड़िया, संजयजी, प्रमोदजी, महेशजी, विमला गुप्ता, सुनीलजी निरन्तर पांचों दिन आनन्द सरिता में गोते लगाते रहे।

हिसार हरियाणा से श्री बदलूसिंह आर्य के नेतृत्व में बड़ी संख्या में कार्यक्रम में पधारे और कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा करते हुए अच्छा आर्थिक सहयोग भी दिया।

तारानगर से सुभाष जी, रेखा, छोटू, रामतेजजी, जयमालसिंहजी एवं श्री रणजीत शास्त्री के नेतृत्व में मोती का बास से १५ झालसर से १३ राजू की ढ़ाणी से १३ बाडेट से ३५ आर्य बन्धु पधारे।

गोडास से श्री देवदत्त आर्य, श्री रामेश्वर आर्य के नेतृत्व में उनके गांव एवं परिवार के बहुत से बन्धु यहां पधारे।

सहावा से श्री रणधीर ढ़ाका के साथ उनके मित्रमण्डल एवं परिवार के १० सदस्यों ने भाग लिया।

जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बिल्लू पर्वतपुर, नागौर, डूंगरगढ़, धौलपुर बाड़ी, भरतपुर से अनेक आर्य बन्धुओं ने पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

राजगढ़ से विजयकुमारजी सरावगी, कैलाशजी मधु निर्मला स्नेहलता श्रद्धाभिभूत थे।

रावतसर से सन्तोष देवी पहुंचकर आर्य प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

नोहर से विकासजी संगीता जी साथ ५ लोग आये।

भादरा से तेजपालजी, कृष्णा जी, हरीश जी कालू रोशनजी पधारे।

झुंझुनूं से- सुधा, मुकेश, सुधाकर जी सपरिवार प्रमोदजी, भगवती देवी नीमा, चिरंजीलालजी, पवन आर्य गुड्डू बाबू गुड़िया, निशा, सनीजी, डॉ. राजकुमार जी, डॉ. जसवन्त सिंह यादव, तहसीलदार पूनियांजी आदि ने अनेक लोगों ने सपत्नीक भाग लिया और यजमान बने।

फतेहपुर से - आचार्य रामगोपालजी, रजनीकान्तजी, नरेन्द्र सिंह चौहान, ईश्वरसिंहजी, मनीष आर्य आदि ने भाग लिया।

* बिसाऊ से श्री सहदेव, देवकीनन्दजी के नेतृत्व में १० लोग पधारे।
* रामगढ़ से श्री जगदीश जी जौहरी के साथ अनेक लोग पधारे।
* चूरू से श्री अमीलालजी कस्वां और उनके साथी आये।
* चिड़ावा से श्री मुरारीलालजी सपरिवार मित्रों सहित अनेक सज्जन आये।
* मंडेला से सुशील जी रामगोपाल माखरिया कौशल्या देवी अपने परिवारों के साथ पधारे।
* दुजार- यशपाल शर्मा सपरिवार बेटी अभिलाषा और अन्य आर्य बन्धु पधारे।
* डीडवाना से जगदीश जी आर्य सपिरवार एवं मित्रों सहित पधारे।
* नागौर से ओमप्रकाश जी सपरिवार एवं मित्रों सहित पहुंचे।
* बिल्लू से - श्री किशनाराम आर्य पधारे
* दूधवा खाना से वैद्य रामकिशन आर्य के नेतृत्व में बहुत से आर्य बन्धु पधारे।

इनके अतिरिक्त और भी बहुत से आर्य बन्धु पधारे जिनके नाम इसमें नहीं आ पाये है सभी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

समापन समारोह के अन्त में आर्य समाज के प्रधान शिवदत्त राय आर्य, वासुदेव आर्य मंत्री रामगोपाल आर्य, शिवकुमार आर्य, जगदीशप्रसाद माखरिया ने सभी विद्वानों, संन्यासियों और दूर-दूर से पधारे हुए आर्य बन्धुओं का धन्यवाद ज्ञापन किया।

विनोद शास्त्री

यज्ञ से सतत पुरुषार्थ करने के पश्चात ही फल प्राप्त होता है। उससे मनुष्य संतुष्ट रहता है।

www.thearyasamaj.org

समारोह की झलकियाँ

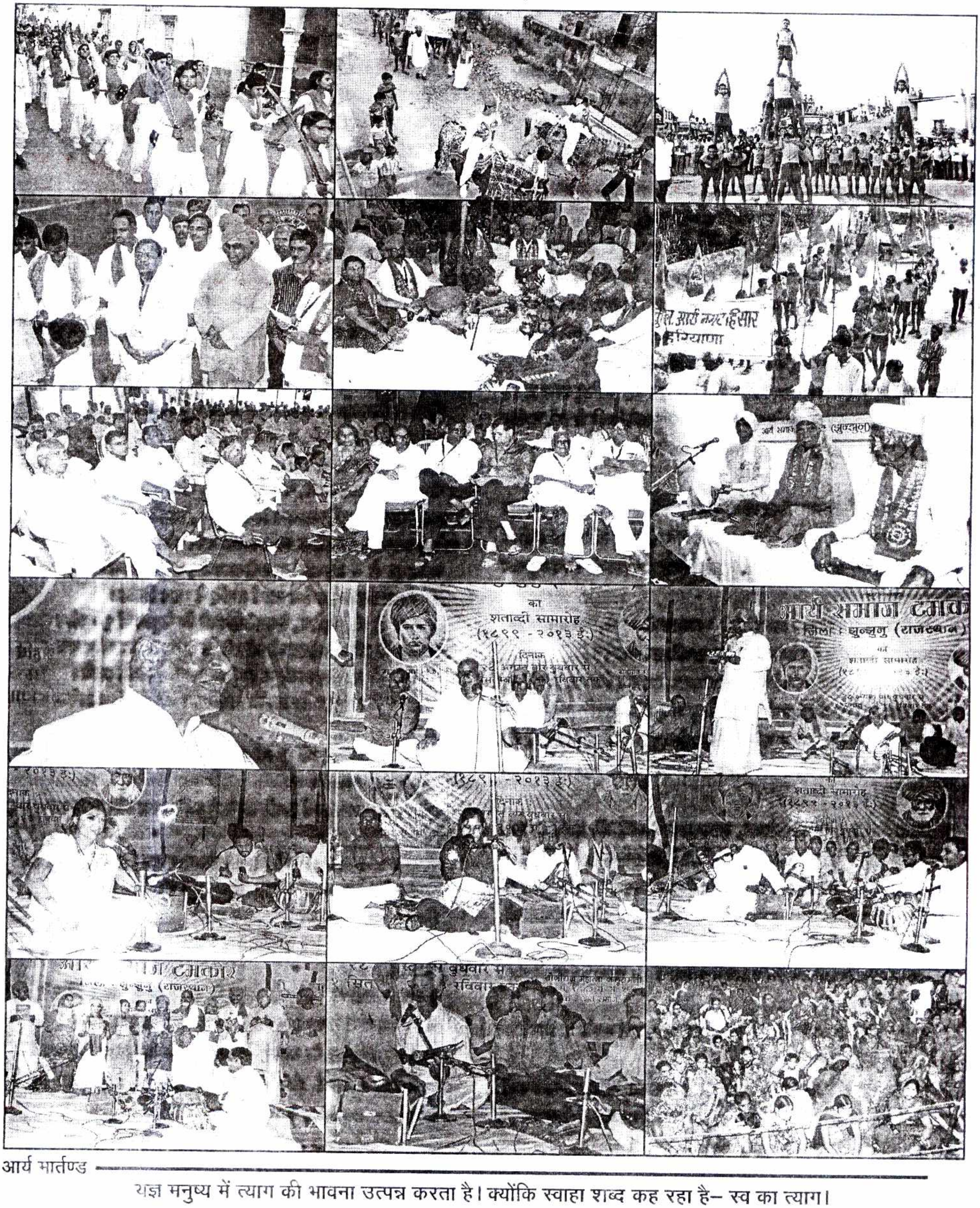

यज्ञ मनुष्य में त्याग की भावना उत्पन्न करता है। क्योंकि स्वाहा शब्द कह रहा है– स्व का त्याग।

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज जोधपुर की स्थापना का 130 वाँ महोत्सव

मान्यवर जनो! यह महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति न्यास, जहाँ ऋषि दयानन्द ने 31 मई 1883 से 16 अक्टूबर 1883 तक (लगभग साढे चार माह) इस भवन में रहकर अपने जीवन की अन्तिम, वैदिक धर्म की विश्वजयी पताका फहराई थी। उनके इसी पावन अभियान से द्वेष रखने वाले कतिपय कुल-घातकों ने षड्यन्त्र पूर्वक इसी भवन में प्राणलेवा विष देकर एक न मिटने वाला कलंक अपने माथे पर लगा लिया था।

जोधपुर के ऋषि भक्त आर्यो के सहयोग से भवन को लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के रूप में इसे ऋषि के सपनों को साकार करने के सक्रिय केन्द्र के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया। उसी संकल्प में संलग्न हम आर्य जन अपने 27,28,29 व 30 सितम्बर 2013 के चार दिवसीय सम्मेलन के लिए आप सबको सादर आमंत्रित कर रहे हैं।

यह विशेष उत्सव महर्षि दयानन्द का 130 वर्ष पूर्व जोधपुर के इस न्यास भवन में पदार्पण, साढे चार मास के निवास व वैदिक धर्म के प्रचार को चिरस्थायी बनाने और उनकी वैदिक शिक्षाओं को निरन्तर चलाए रखने के लिए सन् 1885 में स्थापित आर्य समाज जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में प्रान्तीय स्तर पर मनाया जा रहा है। आप सबकी गरिमामयी उपस्थिति से हमारे ऐतिहासिक सम्मेलन की शोभा तो बढ़ेगी ही, साथ ही सम्मेलन में होने वाली विविध उपयोगी परिचर्चाओं और उनके निष्कर्षों का मूल्य भी बढ़ जायेगा।

आमंत्रित विद्वान् व संन्यासी गण

आचार्य बल्देव जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, डॉ. रामप्रकाश जी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी, डॉ. वेदपाल जी (मेरठ), डॉ. धर्मवीर जी, श्री ओम्मुनि जी, डॉ. राजेन्द्र जी विद्यालंकार, आचार्या सूर्यादेवी जी, विनय जी आर्य, पण्डित रामनारायण शास्त्री, पण्डित रामनिवास गुणग्राहक, अमरमुनि जी, पण्डित कमलेश कुमार जी अग्निहोत्री।

शुक्रवार, 27.9.2013

प्रातः 8.00 से 8.30 बजे	ध्वजारोहण आचार्य बलदेव जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) व स्वामी धर्मानन्द जी (गुरुकुल माउण्ट आबू) राष्ट्रगीत-छात्राएँ गुरुकुल शिवगंज/आर्यवीरदल ''ऋषिस्मृति प्रकाश'' का विमोचन महोत्सव की घोषणा
प्रातः 830 से 9.30 बजे	यजुर्वेद पारायण यज्ञ, आचार्य सूर्यादेवी
प्रातः 9.30 से 10.00 बजे	वेद प्रवचन आचार्य सूर्यादेवी गुरुकुल शिवगंज।
प्रातः 10.00 से 10.30 बजे	प्रातराश
प्रातः 10.30 से 01.00 बजे	वेद व अध्यात्म सम्मेलन- अध्यक्ष स्वामी धर्मानन्द जी, संयोजक-रामनिवास 'गुण ग्राहक'-15 मिनट, भजनोपदेश- आचार्य अशोक कुमार- 30 मिनट, वक्ता डॉ. वेदपाल जी, डॉ. धर्मवीर जी 45+45 मि.
दोप. 1.00 से 2.00 बजे	भोजन विश्राम
दोप. 2.00 से 5.00 बजे	शोभायात्रा, नगर कीर्तन संयो- दुर्गादास 'वैदिक'
सायं 5.00 से 7.00 बजे	भोजन व दिनचर्या
सायं 7.00 से 7.30 बजे	सामूहिक संध्या वन्दन-राम निवास 'गुण ग्राहक' श्री दुर्गादास 'वैदिक'
सायं 7.30 से 10.30 बजे	धर्माचरण सम्मेलन- अध्यक्ष स्वामी धर्मानन्द जी, संयोजक- पंडित राम नारायण शास्त्री भजन उपदेश- अशोक कुमार, सत्यपाल जी सरल व भूपेन्दसिंह 20+20+20 मिनट, वक्ता- डॉ. धर्मवीर जी, डॉ. वेदपाल जी, आचार्या सूर्यादेवी जी 30+30+30।

शनिवार, 28.9.2013

प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	यजुर्वेद पारायण यज्ञ, आचार्य सूर्यादेवी
प्रातः 9.00 से 9.30 बजे	वेद प्रवचन आचार्य सूर्यादेवी गुरुकुल शिवगंज।
प्रातः 9.30 से 10.00 बजे	प्रातराश
प्रातः 10.00 से 12.30 बजे	मानव निर्माण (संस्कार) सम्मेलन अध्यक्ष- डॉ. धर्मवीर जी, संयोजक- राम निवास 'गुण ग्राहक', भजन- आचार्य अशोक कुमार जी, वक्ता डॉ. वेदपाल जी, डॉ. राजेन्द विद्यालंकार आचार्या सूर्यादेवी जी।
दोप. 12.30 से 2.00 बजे	भोजन, विश्राम
दोप. 2.00 से 5.00 बजे	परिवार, समाज संगठन सम्मेलन अध्यक्ष- डॉ. वेदपाल जी, संयोजक- पं. राम नारायण शास्त्री, भजन- पं. सत्यपाल जी सरल, पं. अशोक कुमार, वक्ता- डॉ. धर्मवीर जी, आचार्य सूर्या जी
सायं 5.00 से 7.00 बजे	भोजन, दिनचर्या
सायं 7.00 से 7.30 बजे	सामूहिक संध्या वंदन
सायं 7.30 से 10.30 बजे	वर्णाश्रम व्यवस्था सम्मेलन, अध्यक्ष- स्वामी सुमेधानन्द जी, संयोजक- राजेन्द्र विद्यालंकार, भजन- पं. भूपेन्द जी, पं. सत्यपाल जी, आचार्य अशोक कुमार जी, वक्ता- डॉ. वेदपाल जी, आचार्य सूर्या देवी।

यज्ञ के द्वारा मनुष्य अपनी उन्नति अर्थात् ऊँचा उठता है। प्रज्ज्वलित अग्नि की ज्वालाओं को ऊँचा उठता देखकर मनुष्य के हृदय में उन्नति की प्रेरणा प्राप्त होती है तथा उसकी प्रसुप्त भावनाऐं जागृत हो जाती है।

रविवार, 29.9.2013

प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	यजुर्वेद पारायण यज्ञ, आचार्य सूर्यादेवी
प्रातः 9.00 से 9.30 बजे	वेद प्रवचन आचार्य सूर्यादेवी
प्रातः 9.30 से 10.00 बजे	प्रातराश
प्रातः 10.00 से 12.30 बजे	राष्ट्रोदय व राजधर्म सम्मेलन, अध्यक्ष- डॉ. राम प्रकाश जी, संयोजक- रामनिवास गुण ग्राहक, भजन- आचार्य अशोक कुमार, वक्ता- डॉ. धर्मवीर जी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार।
दोप. 12.30 से 2.00 बजे	भोजन, विश्राम
दोप. 2.00 से 4.00 बजे	भोगवाद व ऋषि दयानन्द का आर्थिक चिन्तन, अध्यक्ष- स्वामी धर्मानन्द जी, संयोजक- पं. रामनारायण जी, भजन- भूपेन्द सिंह जी, पं. सत्यपाल जी सरल, वक्ता- डॉ. वेद पाल जी व डॉ. सुरेन्द कुमार, डॉ. राजेन्द विद्यालंकार जी।
सायं 4.00 से 6.00 बजे	आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की साधारण सभा की बैठक
सायं 5.00 से 7.00 बजे	भोजन, दिनचर्या
सायं 7.00 से 7.30 बजे	सामूहिक संध्या वंदन-रामनिवास 'गुण ग्राहक'
सायं 7.30 से 10.30 बजे	'ऋषि दयानन्द व्यक्तित्व व कृतित्व सम्मेलन', अध्यक्ष- डॉ. धर्मवीर, संयोजक- डॉ. राजेन्द विद्यालंकार/ रामनिवास जी, भजन- अशोक कुमार जी, भूपेन्द्र जी व सत्यपाल जी सरल, वक्ता- डॉ. वेदपाल जी, डॉ. राम प्रकाश जी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी।

सोमवार, 30.9.2013

प्रातः 7.30 से 9.00 बजे	यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति
प्रातः 9.00 से 9.30 बजे	वेद प्रवचन आचार्य सूर्यादेवी
प्रातः 9.30 से 10.00 बजे	प्रातराश
प्रातः 10.00 से 12.30 बजे	आर्य समाज गौरव (कार्य व प्रभाव) सम्मेलन, अध्यक्ष- आचार्य बलदेव जी, संयोजक- पं. राम नारायण शास्त्री, भजन- अशोक कुमार जी, वक्ता- डॉ. धर्मवीर जी, डॉ. वेदपालजी
दोप. 12.30 से 2.00 बजे	भोजन, विश्राम
दोप. 2.00 से 2.30 बजे	आर्य प्रकाशकों का सम्मान समारोह
सायं 2.30 से 5.30 बजे	अंधविश्वास कुरीति निवारण सम्मेलन, अध्यक्षता- स्वामी धर्मानन्द जी, संयोजक- राम निवास 'गुण ग्राहक', भजन- भूपेन्द्र जी सत्यपाल जी सरल, पं. अशोक कुमार जी, वक्ता- डॉ. धर्मवीर, डॉ. वेदपाल जी, आचार्य सूर्यादेवी जी, पं. रामनारायण जी, शंका समाधान, धन्यवाद आभार- श्री विजय सिंह जी भाटी जी और ध्वजावतरण
सायं 5.30 से 7.30 बजे	भोजन व दिनचर्या
सायं 7.30 से 8.30 बजे	सामूहिक संध्योपासना
सायं 8.00 से 10.00 बजे	राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यकर्ता सम्मेलन, अध्यक्ष- श्री विजयसिंह जी भाटी
सायं 7.30 से 10.00 बजे	संयोजक- अमर मुनि जी

-आर्य किशनलाल, बृजेश कुमार आर्य, मंत्री

आर्य समाज शाहपुरा द्वारा वेद प्रचार

आर्य समाज द्वारा मिति सावण सुदी पूर्णिमा दिनांक 21.8.2013 से अलग-अलग स्थानों पर वेद पाठ, यज्ञ-भजन आदि के कार्यक्रम रखे गये। जो निम्न प्रकार है-

दि. 21.8.2013 को श्री जगदीश मंदिर, बाण्डी मौहल्ला, रवला घाट के पास

दि. 22.8.2013 को श्री जी महाराज का मंदिर, चमना बावड़ी के पास

दि. 23.8.2013 को नागर बाग यज्ञशाला, नगर बाग में

दि. 24.8.2013 को श्री भगवती प्रसाद जी बड़ गुर्जर, कलींजरी गेट

दि. 25.8.2013 को री वेद प्रकाश जी व्यास, कलींजरी गेट

दि. 26.8.2013 को रा.बा.उ.प्रा. विद्यालय (पुराने जनाना अस्पातल में) शाहपुर

दि. 27.8.2013 को बालाजी का मंदिर धाकड़ मौहल्ला शाहपुर

दि. 28.8.2013 को दयानन्द उच्च प्राथमिक विद्यालय, महिला शिक्षण केनद्र शाहपुरा

उपर्युक्त कार्यक्रमों में आर्य समाज के प्रधान कन्हैयालाल आर्य उप प्रधान हीरालाल आर्य, मंत्री सत्य नारायण तोलम्बिया, पुरोहित बाल मुकन्द बगेटवाल, शांती लाल लखोटिया, मदन मोहन सुंगधी, गोपाल राजगुरु, अन्नपूर्णा शर्मा, रमेश शर्मा, विश्वबंधु पाठक, सज्जनसिंह आदि एवं मौहल्लेवासियों की उपस्थिति रही।

-सत्यनारायण तोलम्बिया, मंत्री

नाम करण संस्कार

आर्य समाज खैरथल के प्रधान महाशय किशोरीलाल आर्य के प्रपौत्र का दिनांक 17.8.2013 को पं. जयराम आर्य के पुरोहित एवं ब्रह्मचारी ओमकार के सान्निध्य में वैदिक संस्कार द्वारा नाम चि. रजत रखा गया। यज्ञ के पश्चात नवजात शिशु को आशीर्वाद दिया एवं बधाई गीतों द्वारा अनेक व्यक्तियों ने बधाई दी। पश्चात प्रसाद वितरण किया गया एवं दान दक्षिणा दी गई। इस समारोह में उपस्थिति अच्छी रही सभी को यथायोग्य सम्मान से विदा किया गया।

मंत्री आर्य समा, खैरथल

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज, तिजारा

दिनांक 20.8.2013 से 28.8.2013 रक्षा बंधन से जन्माष्टमी तक आर्य समाज मंदिर तिजारा में 'श्रावणी पर्व' मनाया गया। इस पर्व में आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता शिव कुमार शास्त्री सहारनपुर, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नारायण शास्त्री नजफगढ़-दिल्ली, आर्य प्रति. सभा राजस्थान के महामंत्री श्री अमरमुनि प्रसिद्ध आर्य नेता श्री जगदीश जी आर्य उपाध्यक्ष आ. प्रति. सभा राजस्थान ने सुबह 8 से 11 व शाम 8 से 11 बजे तक वेद ज्ञान की गंगा बहाकर आने वाले सभी श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया। कार्यक्रम में समय-समय पर सुबह की सभाओं में विशेष दानदाताओं की उपस्थिति भी रही। इनमें एक दान दाता श्री होशियार सिंह उर्फ हंसराज ठेकेदार निवासी थड़ा (तिजारा) ने अतिथि कक्ष निर्माण हेतु 1 लाख 21 हजार रूपये की दान राशि आर्य समाज तिजारा को भेंट की। कार्यक्रम में सभी श्रोताओं ने वेद के प्रचार से अपने परिवारों को संस्कारित करने के लिये आर्य समाज को साधुवाद कहा और भविष्य में इस प्रकार के कार्यक्रमों से समाज का हित करने के लिय समस्त कार्यकारिणी का आभार व्यक्त किया। इस समय पर कार्यकारिणी में प्रधान रामनिवास आर्य उर्फ रामु सैनी, मंत्री फतेहसिंह व कोषाध्यक्ष श्री फूलसिंह आर्य, श्री राम आर्य, श्री कंचनसिंह आर्य, रोशन लाल आर्य, हुकम चन्द जी, रतनलाल आर्य, रामावतार जी आदि ने सराहनीय कार्य किया।

-रामनिवास आर्य, मंत्री

आर्य समाज मगरा पूंजला, जोधपुर

आर्य समाज मगरा पूंजला में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व दिनांक 28.8.2013 को हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा श्री राजेन्द्र प्रसाद जी वैष्णव थे। यज्ञ में चार जोड़े बैठे। श्री राजेन्द्र जी वैष्णव ने यज्ञ का महत्व बताया। यज्ञ के पश्चात् श्री चैनसिंह जी पवार ने श्री कृष्ण के जीवन सम्बन्धी भजन रखे। उन्होंने अपने भजनों में बताया कि श्री कृष्ण ने कभी भी मक्खन नहीं चुराया। श्री कृष्ण के एक ही पत्नी थी जिसका नाम रूकमणी था राधा कृष्ण की पत्नी नहीं थी।

श्री चैनसिंह जी के पश्चात श्री विमल जी शास्त्री ने श्री कृष्ण जी के जीवन के बारे में बताया कि श्री कृष्ण एक योगी थे। हम उन्हें भोगी नहीं बनावें। उन्होंने कभी भी पानी लेकर आने वाली स्त्रियों के घड़ों पर कंकड नहीं फेके थे। महाभारत की लड़ाई में उन्होंने पांडवों का साथ दिया जिसकी मदद से पांडव युद्ध में विजयी हुए। उन्होंने योजनाबद्ध तरीकों से महारथियों का वध करवाया। श्री कृष्ण ने कहाँ - कर्म किये जाओं फल की इच्छा मत रखो।

इस उत्सव की अध्यक्षता श्री बुद्धि प्रकाश जी मंत्री, नगर आर्य समाज गुलाब सागर जोधपुर ने की। कार्यवाही का संचालन मंत्री ने किया, धन्यवाद प्रधान श्री भीकसिंह जी ने दिया।

- जयसिंह भाटी, मंत्री आर्य समाज, मगरा पूंजला, जोधपुर

वेद प्रचार कार्यक्रम चूरू एवं झुन्झुनू

दिनांक 19.8.2013 को -आर्य समाज तारानगर में प. भूपेन्द जी मण्डली सहित भजनोपदेशक, यज्ञादि कार्यक्रम बड़ी संख्या में आर्य हेतुराम भाकर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

दिनांक 20.8.2013 को- आर्य समाज गोडस जिला चूरू में रात्रि में श्री देवीदत्त जी आर्य की अध्यक्षता में पं. भूपेन्द्र जी भजनोपदेश का भारी संख्या में महिला व पुरुषों ने भजनोपदेश का आनन्द लिया। प्रातः यज्ञादि के उपरान्त रा.उ.मा.विद्यालय में भी प्रधानाचार्य की अध्यक्षता में भजनोपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दिनांक 21.8.2013 को- आर्य समाज दूधवा में श्री किशनलाल आर्य की अध्यक्षता में रात्रि में अच्छी संख्या में भजनोपदेश का बहुत ही शानदार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रातः यज्ञादि में भी महिला पुरुषों ने भाग लिया।

दिनांक 22.8.2013 को- गांव साड़सर में श्री मानसिंह आर्य के घर पर वेद प्रचार एवं प्रातः यज्ञादि का कार्यक्रम पं. भूपेन्द जी मण्डली सहित किया गया।

दिनांक 23.8.2013 को- राजू की ढाणी में श्री मोहरसिंह आर्य के घर के सामने मैदान में वेद प्रचार कार्यक्रम हुआ।

दिनांक 24.8.2013 को- सुभाषचन्द बोस सी.स.स्कूल साहवा में भजनोपदेश एवं यज्ञादि श्री रणधीर आर्य की अध्यक्षता में पं. भूपेन्द का शानदार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दिनांक 25.8.2013 को-धीरवास बड़ा गौशाला में श्री बलवीर आर्य की प्रेरणा से वेद प्रचार-यज्ञादि का कार्यक्रम पं. भूपेन्द जी की मण्डली द्वारा किया गया।

दिनांक 26.8.2013 को- श्री मोहरसिंह की अध्यक्षता में ग्राम बाडेट में भारी संख्या में महिला व पुरुषो ने पं. भूपेन्द जी का भजनोपदेश सुना तथा यज्ञादि का भी अच्छा कार्यक्रम हुआ। गांव के लोगों ने पुनः वेद प्रचार की मांग की।

दिनांक 27.8.2013 को- गांव मोती का बास में श्री अमीलाल जी प्रधान के घर भजनोपदेश -यज्ञादि का कार्यक्रम हुआ। प्रधान जी साप्ताहिक यज्ञ सतसंग आदि कराने का संकल्प लिया और मांग की हमारे गांव में आर्य समाज की स्थापना हो।

नोट- उपर्युक्त सभी कार्यक्रम टमकोर आर्य समाज शताब्दी समारोह के निमित्त आचार्य रणजीत शास्त्री के सयोजकत्व में चूरू व झुंझुनू जिलों में वेद प्रचार का अच्छा प्रेरणादायक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान से प्रार्थना करते है कि वर्ष में दो बार वेद प्रचार का कार्यक्रम अवश्य ही दें।

-आचार्य रणजीत शास्त्री

आर्य समाज, मानसरोवर

आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर की कार्यकारिणी के चुनाव दिनांक 7.4.2013 को सम्पन्न हुऐ। चुनाव प्रक्रिया डॉ. रामपाल विद्या भास्कर द्वारा निर्वाचन अधिकारी के रूप में सम्पन्न हुई।

कार्यकारिणी का गठन निम्न लिखित अनुसार धोषित किया गया-

प्रधान- श्री अर्जुन देव कालड़ा

उप प्रधान- ईश्वर दयाल माथुर व विनोद मेहरा

मंत्री- श्री सुरेश साहनी, उप मंत्री- श्री भूषण धवन

कोषाध्यक्ष- श्री ओम प्रकाश गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष- श्री मोहनलाल लुहाना

इनके अतिरिक्त 6 कार्यकारिणी सदस्य भी चुने गए।

अर्जुनदेव, प्रधान

वृक्ष लगाना, यज्ञ करना धार्मिक कृत्य ही नहीं अपितु हमारी आवश्यकता है

पर्यावरण को शुद्ध रखने के दो ही मुख्य उपाय है एक वृक्षों का लगाना दूसरा अग्नि होत्र करना। वृक्ष हमें प्राण वायु प्रदान करते हैं और कार्बन आदि वायु का शोषण करते है। इससे वातावरण शुद्ध होता है। लेकिन यह प्राण वायु खुले वातावरण में तो सहज उपलब्ध हो जाती है लेकिन शहरों तथा कस्बों तथा औद्योगिक क्षेत्र में शुद्ध वायु हवा का प्रवेश नहीं हो पाता वहाँ दूषित वायु अधिक और शुद्ध कम होती है। इसलिये ऐसे स्थानों (मकानों), मौहल्ले, कॉलोनियों, कल कारखानों, गोदामों की वायु को शुद्ध करने का प्रयास हमें करना पड़ेगा। वह उपाय अग्निहोत्र के द्वारा ही संभव है। क्योंकि अग्नि होत्र के द्वारा भेषज वायु बनती है। वह दूषित वायु को जड़ से निकालकर शुद्ध वायु अपना स्थान बना लेती है और उस परिवेश को शुद्ध कर देती है।

विचारणीय विषय यह है कि यज्ञ में घृत व सामग्री के अलावा समीधा (लकडी) का होना भी आवश्यक है बिना उसके यज्ञ कैसे हो और वेद का आदेश है कि प्रत्येक परिवार में दोनों समय यज्ञ हो। इसके लिये समिधा आये कहां से अभी कुछ ही परिवार यज्ञ एक समय करते है तभी समिधा 15/- रूपये कि जो बिक रही है। अन्त्येष्टि संस्कार में तो 12 मन लकड़ी की आवश्यकता है। धीरे धीरे अंतिम समय पर किया जाने वाला वृहद् यज्ञ का स्वरूप धीरे धीरे परिवर्तित होता चला जा रहा है। बिजली द्वारा भी यही संस्कार किया जा रहा है जोकि कतई हाइजिनिक नहीं है बिजली द्वारा किया गया संस्कार प्रदूषण फैलायेगा वातावरण शुद्ध नहीं कर सकता जबकि अग्नि होत्र द्वारा प्रदूषण को जड़ से समाप्त किया जा सकता है। क्योंकि उसमें समिधा, घृत व सामग्री डाली जाती है वह दुर्गन्ध को समाप्त कर सुगन्ध पैदा करती है। यज्ञ में काम आने वाले इन पदार्थों का अभाव होता जा रहा है और आगे आगे बहुत अधिक कम हो जायेगा ऐसा ना हो कि हम समय पर चेते नहीं और वैदिक रीति से अन्तेष्टि संस्कार बिलकुल ही समाप्त हो जाये। इसका हमें उपाय सोचना आवश्यक है इसलिए हम आर्य जो प्रतिदिन यज्ञ करते है वह यह प्रतिज्ञा करें कि हम अपने जन्मदिन पर एक पेड़ अवश्य लगायेगें और उसे पूर्ण संरक्षण देंगे एवं प्रत्येक मृतक का परिवार यह निर्णय करे कि मृतक की स्मृति में हम कम से कम पीपल, बड़, खेजडी आदि का पेड अवश्य लगायेंगे यह ही उनकी श्रद्धांजलि होगी। हमें क्या अधिकार है कि हम अग्निहोत्र में समिधा (लकड़ी) जला तो दें और नये पेड ना लगायें। पुरोहित विद्वान जहाँ भी अन्त्येष्टि संस्कार में जायें या श्रद्धाजंलि समारोह में जायें अपने प्रवचन के द्वारा पेड लगाने के लिए प्रेरित अवश्य करें। ऐसे ही जन्मदिन पर प्रेरित करें। तभी नये इस समस्या यह का हल हो सकता है।

इसी प्रकार घृत व सामग्री के अभाव पर भी चिंतन करना पड़ेगा। अधिक से अधिक गौशालाओं की स्थापना कर नस्ल सुधार कर घी, दूध की वृद्धि की जाय इसकी व्यवस्था करनी होगी। हवन सामग्री को भी और शुद्ध औषधियुक्त बल वर्धक एवं पर्यावरण शुद्धि करने योग्य बनाई जाये। यह कार्य तभी सम्भव होगा जब हम सब मिलकर यज्ञ जैसे जीवनदायी विचार को सामूहिक रूप से अपनायेगें। अगर हमने समय रहते इस पर चिन्तन कर व्यावहारिक रूप नहीं दिया तो प्राणिमात्र का भविष्य अग्निहोत्र के बिना खतरे में पड़ जायेगा।

यज्ञ व वृक्षों का लगाना जीवनदायी विचार है इसे जन-जन तक पहुँचाना पुण्य कार्य है। -अमर मुनि वानप्रस्थ

विशेष- आयुर्वेद में भिलावा, कुचला, आदि विष जो बड़े घातक होते हैं जिनके सेवन से तुरंत मृत्यु हो जाती है परन्तु इन्हीं को गोमूत्र में शुद्ध किया जावे तो ये अमृत बन जाते है और कष्ट साध्य रोगों की भी चिकित्सा करते हैं। जो विष को अमृत बनाए वह गोमूत्र ही है।

नागौर जिले में जिला सभा का गठन

राजस्थान में आर्य सिद्धांतों एवं वैदिक विचारधारा को मानने व प्रचारित करने में ऋषि दयानन्द के भक्त नागौर जिले के आर्य समाज के कार्यकर्ता प्रारम्भ से ही लगनशील रहे हैं।

इसी श्रृंखला में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर के उप प्रधान (अजमेर संभाग) मदन लाल आर्य एवं अंतरंग सदस्य किशनाराम बिलू के सानिध्य में नागौर जिले की 'जिला कार्यकारिणी का गठन सर्व सम्मति से किया गया। नागौर जिले की 35 आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिसे निम्नाकित पदाधिकारी चुने गये-

संरक्षक- श्री शिव नारायण चौधरी, नागौर
प्रधान - श्री किशनाराम विलू, मकराना
उप प्रधान- श्री रामचन्द्र सिंह, लोडनूं
मंत्री- श्री यशमुनि, परवतसर
उपमंत्री- गोविन्द आर्य, डीडवाना
कोषाध्यक्ष- राजेन्द्र आर्य, कुचेरा
संयुक्त मंत्री- ओमदास आर्य, निम्बी जोधा
अंतरंग सदस्य- श्री मदनलाल-डेगान, डॉ. टीकाराम-बांलिया, श्री श्रीचन्द आर्य-दूजार, श्री अमराराम आर्य-पीलवा, वैद्य ओम प्रकाश- ईडवा,

www.thearyasamaj.org

श्री गणपत सिंह - डोडियाना, श्री नारायण स्वामी, छोटी खाटू, श्री राजाधर अग्रवाल- कुचामन, श्री डूंगर राम-तंवरा, श्री गोविन्दराम बोहरा- नीम्बी खुर्द, श्री हेमराम- मकराना, श्री रगजी राम-चोलियास, श्री नीरज शर्मा-मूंडवा, श्री जंवरी लाल- मेड़ता, श्री प्रकाश कमेड़िया- डांगावास

कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि सभी समाजों को और सक्रिय करेंगे, सितम्बर 2013 में पूरा मास उपदेशकों से पूरे जिले में प्रचार करायेंगे। दान दाताओं ने स्वेच्छा से दान देकर जिला कोष भी बनाया।

– मदनलाल आर्य, उपप्रधान

स्वतंत्रता सेनानी की पुण्यतिथि पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

स्वतंत्रता सेनानी श्री हरिसिंह जी आर्य की छठी पुण्यतिथि पर दिनांक 1 सितम्बर 2013 (रविवार) को स्वामी सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार न्यास, जयपुर की ओर से छात्र- छात्राओं की वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में जयपुर और अजमेर की ओर से छात्र-छात्राओं की वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में जयपुर और अजमेर शहर की बीस शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों नें भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन दो वर्गो में किया गया। प्रथम वर्ग में कक्षा 5 से 6 तक 8 तक के विद्यार्थी, विषय- तीर्थ यात्राएँ धार्मिकता का प्रमाण है?' और द्वितीय वर्ग में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी, विषय- भ्रष्टाचार देश की सबसे बड़ी समस्या है? दोनों वर्गो में कुल 42 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम श्री एम.एल. गोयल, निदेशक डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाऐं, राजस्थान एवं पूर्व शिक्षा परामर्शदाता, बिनानी-सीमेंट लिमिटेड बिनानीग्राम (सिरोही) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि माननीय श्री सत्यव्रत सामवेदी-प्रधान आर्यसमाज आदर्श नगर, जयपुर, उपस्थित थे। कार्यक्रम में डॉ. सुभाष वेदालंकार, डॉ. रामपाल शास्त्री, डॉ. मदन मोहन जावलिया और श्रीमती अरुणा देवड़ा, रावत मिष्ठान भंडार जयपुर-जोधपुर और जयपुर शहर के गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त आर्य समाज के पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्र संयोजिका श्रीमती सरोज आर्या ने अवगत कराया कि दोनों वर्गो की प्रतिभागियों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विजेता प्रतिभागियों को क्रमशः श्रीमती अरुणा देवड़ा ने 3100/- रू., श्री अशोक शर्मा, मंत्री मोती कटला ने 2100/- रू., श्री शकर लाल शर्मा, उप प्रधान आर्य समाज कृष्णपोल बाजार ने 1100/- रू. और द्वितीय श्रेणी में श्रीमती शकुंतला खत्री ने 3100/- रू., श्री मंयक भारती/ डॉ. हेमलता भारती ने 2100/- रू., श्री ओम प्रकाश झालानी, आर्य समाज बगरु ने 1100/- रू. का नकद पारितोषिक प्रदान किया। इस अवसर पर श्रीमती मधुर भाषणी कपूर ने स्वतंत्रता सेनानी के जीवन के प्रेरक संस्मरणों को सबके सम्मुख रखा। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सरोज आर्या कोषाध्यक्ष न्यास ने किया।

कार्यक्रम के अंत में श्री एम.एल. गोयल साहब के अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् न्यास मंत्री श्री ओ.पी. वर्मा ने सभी कार्यक्रम सहयोगियों एवं प्रेरकों को और आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद प्रेषित किया। अंत में शांतिपाठ, उद्घोष के बाद सभी ने ऋषि लंगर का आनंद लिया।

-सरोज वर्मा

भारतीय गाय क्यों पूजनीय हैं?

* किसी भी पशु पक्षी का बच्चा जन्म लेते ही मां नही पुकारता। यहां तक कि मनुष्य का बच्चा भी रोता चिल्लाता है परन्तु मां शब्द का उच्चारण नहीं कर सकता। जब उसे सिखाया जाएगा तभी मां कहना आरम्भ करेगा। परन्तु गाय का बच्चा पैदा होते ही मां कहने लगता है और सच पूछो तो सृष्टि के आदि में गाय से हमें मां शब्द मिला। इस शब्द में स्नेह, रस, आस्था, श्रद्धा है वह मम्मी, अम्मी आदि में नहीं
* जो स्नेह गाय के नेत्रों से बरसता है वह अन्य पशुओं में नहीं देखा जाता। आप गाय पर हाथ फेरिए फिर अनुभव करना वह आपकों कितना प्यार दुलार देगी।
* किसी पशु पक्षी के मल को नाम नहीं दिया गया केवल गाय के मल को ही गोबर नाम दिया। इसे भारतीय संस्कृति में अति पवित्र शुद्धि करने वाला, जिसमें लक्ष्मी वास करती हो ऐसा कीटनाशक (एंटीसैप्टिक एन्टीबायटिक) पदार्थ कहा है।
* गोबर भूमि की उर्वरक शक्ति को बढ़ाकर प्रदूषण को हरता है। गोबर से पुते घरों में सर्दी गमी संतुलित रहती है और हानिकारक गैसों का प्रवेश नहीं हो पाता।
* किसी भी पशु पक्षी को मनुष्य के साथ रिश्ते का नाम नहीं दिया गया। कोई भी चाचा, ताऊ, नाना अथवा ताई, चाची, नानी का रिश्ता नहीं जुड़ा परन्तु ऋषियों ने गाय के साथ गऊमाता मां का रिश्ता जोड़कर नाम दिया गया। क्योंकि ये हमें माँ की तरह ही वर्षो दूध पिलाकर जीवन देती है।
* किसी भी पशु पक्षी यहां तक कि मनुष्य के भी मूत्र पान का कहीं कोई जिक्र नहीं है परन्तु गोमूत्र का सर्वत्र वर्णन मिलता है। यहां तक कि असाध्य कैंसर रोग का भी ईलाज गोमूत्र से सम्भव है।
* किसी भी पशु के दूध में स्वर्ण का अंश नहीं है परन्तु गाय के दूध में स्वर्ण का अंश है।
* भैंस आदि के घी का कण आसानी से रक्त में नहीं घुलता और हृदय रोग की संभावना रहती है परन्तु गाय का घी हृदय रोग को दूर करता है और अमृत के समान है।
* अन्य पशु गंदगी पसंद हैं, भैंस कीचड़ में मस्त रहेगी अपने ही मल में धंसी रहेगी परन्तु गाय सफाई पसंद है।
* गाय के दूध में जो भाईचारे का गुण है वह भैंस के दूध में नहीं है। दस सांड तो इकट्ठे रह सकते हैं परन्तु झोटे दो भी एक साथ नहीं रह सकते।
* गाय का दूध बुद्धि, स्मृति और सहनशीलता बढ़ाने वाला है। बीस गायों को बांधकर उनके बच्चों को छोड दीजिए वे अपनी मां को पहचान कर उसके पास चले जाएंगे परन्तु भैंस के दूध में उतनी बुद्धि नहीं कि उसका बच्चा अपनी मां को पहचान ले। भैंस यदि घर से बाहर छोड़ दी जाए तो वह आपने घर को भूल जाती है और कहीं की कहीं पहुँच जाती है परन्तु गाय को आप 5 किमी. भी छोड़ आओगे तो वह अपने आप घर आ जाएगी, उसे इतनी पहचान है। इसके दूध से स्मृति बढ़ती है।
* भारतीय गाय कड़ी से भी कड़ी धूप और बर्फ जैसी ठंड को सहन कर लेती है परन्तु भैंसा गर्मी में हांफ जाएगा और सहन नहीं कर पाएगा। जो गुण जिसमें होते हैं वैसे ही उसके दूध में भी होते हैं।
* गाय रूखा सूखा, घास पात खाकर भी दूध दे देती है परन्तु भैंस अच्छी खुराक देने पर ही दूध देगी। भैंस का बच्चा मर जावे तो कपड़े का काला खिलौना रूपी बच्चा बना कर उसे दिखा दीजिए तो उसे दूध दे देगी, उसे पहचान नहीं है परन्तु गाय का बच्चा मर जावे तो वह दूध नहीं देगी, उसे बहकाया नहीं जा सकता। यह गुण देसी गाय के हैं।

डॉ. ब्रह्मचारी ओम स्वरूपार्य

www.thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

कार्यालय आदेश

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की विशेषाधिकार समिति (High Power Committee) की मीटिंग दिनांक 12.9.2013 के निर्णयानुसार प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध राजस्थान की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि विभिन्न आवश्यकताओं के आधार पर आर्य समाजों द्वारा सभा से सम्बद्धता प्रमाण पत्र प्राप्त करने की नियमित मांग की जा रही है, इसी आधार पर समस्त सम्बद्ध आर्य समाजों को सम्बद्धता प्रमाण-पत्र दिया जाना सुनिश्चित किया जा रहा है। एतदर्थ सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि वे अपने आर्य समाज के समस्त रिकार्ड विधिवत् रूप से संधारित करें, विधिवत् रूप से चुनाव सम्पन्न करवाएं, आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की गतिविधियों का नियमित-संचालन कर सभी आर्य प्रतिनिधि सभा को अवगत करवाएं। ऐसा नहीं करने पर सम्बन्धित समाज को प्रतिनिधि सभा का सम्बद्धता प्रमाण पत्र दिया जाना सम्भव नहीं होगा। उक्त मीटिंग में यह भी निर्णय लिया गया है कि जो आर्य समाज विवाह संस्कार सम्पन्न करवाना चाहते हैं उन्हें राजस्थान उच्च न्यायालय के आदेश दिनांक 11.5.2012 की अनुपालना में सभा से एतदर्थ पृथक् से स्वीकृति प्रमाण-पत्र प्राप्त करना होगा, इसके अभाव में आर्य समाज विवाह संस्कार सम्पन्न करवाने हेतु अधिकृत नहीं होंगे। विवाह संस्कार हेतु स्वीकृति प्रमाण पत्र प्राप्त करने हेतु आवेदक आर्य समाज का स्वयं का निजी भवन, साप्ताहिक सत्संग, उपस्थिति पंजिका में विधिवत् हस्ताक्षर, बैंक खाता व नियमित ऑडिट, अन्य सम्बन्धित रिकॉर्ड का विधिवत् संधारण, कार्यकारिणी व साधारण सभा की नियमित बैठक, समय पर विधिवत् चुनाव, सभा को दशांश, निश्चित कोटि एवं आर्य मार्तण्ड का शुल्क समय पर देना, पण्डित/पुरोहित की सभा को सूचना, विवाह संस्कार के निमित्त ली गई राशि का बीस प्रतिशत अंश सभा को देय होगा, विवाह सम्पन्न करवाने के 15 दिवस में सम्बन्धित रिकॉर्ड का सभा से अनुमोदन तथा अन्य समय-समय पर निर्मित दिशानिर्देशों का पालन करना आवश्यक होगा। - अमरमुनि, मंत्री

सूचना

डॉ. सुधीर कुमार शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के द्वारा एक कम्प्यूटर सभा को दान स्वरूप दिया है। इसके लिए उनका हृदय से धन्यवाद। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से पुनः निवेदन है कि वे अपना डाक का पूरा पता एवं सभी सभासद् सहित दूरभाष नम्बर सभा कार्यालय में शीघ्र भेज दे ताकि उन्हें कम्प्यूटराइज्ड किया जा सके। कार्यालय नियमित रूप से खुलता है सभा द्वारा भेजी गई डाक तथा पत्रिका (आर्य मार्तण्ड) डाक के ठीक पता न होने के कारण या पदाधिकारियों के द्वारा समय पर नहीं प्राप्त किये जाने के कारण कई बार शिकायत प्राप्त होती रही है। हमारा प्रयत्न है कि हम आधुनिक साधनों का प्रयोग कर इस समस्या का हल शीघ्र निकाल लेंगे। हमें आपके सहयोग की अपेक्षा है।

एक निवेदन यह भी है कि हमारे सभी आर्य पर्व एवं सत्संग सामूहिक रूप से समाजों उत्साह पूर्वक मनावें। हमारा प्रयत्न पारिवारिक सत्संगों के माध्यम से नयी पीढ़ी व महिलाओं को जोड़ने का रहें। हमारे लक्ष्य अधिक से अधिक आर्य बनाने का निरन्तर चलता रहे ऐसी आशा है।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर करे-

मंत्री / प्रधान,

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

राजापार्क आदर्श नगर, परनामी मैचिंग सेन्टर के सामने, जयपुर-302004

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर

मान्यवर प्रतिनिधि,

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक 29.9.2013 को सायं 4.00 से 6.00 बजे तक महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास', जोधपुर में होगा, जिसमें आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

अधिवेशन के विचारणीय विषय-

* पिछली साधारण सभा की कार्यवाही की संपुष्टि
* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के संशोधित विधान की संपुष्टि
* अन्य विषय प्रधान जी की अनुमति से

नोट- इसकी सूचना रजिस्टर्ड डाक द्वारा भी भेजी जा चुकी है।

अमरमुनि, मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।